OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 9

स्वधर्म ही 'धर्म' का पहला ककहरा

आत्मा में निहित गुण जो हमारे जीवन में सुख और शांति की अनुभूति कराते हैं, साथ ही जहाँ ये गुण हैं वहीं आत्मशक्ति का अनुभव होता है क्योंकि ये छः गुण नहीं बल्कि छः शक्तियां हैं। ज्ञान की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, प्रेम की शक्ति, शांति की शक्ति ये सब शक्तियां हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा का स्वधर्म है। हर चीज़ का अपना गुणधर्म होता है। पानी का गुणधर्म है - शीतलता, अग्नि का गुणधर्म है - गर्मी, पानी को कितना भी उबालो फिर उसे छोड़ दो तो वह अपने शीतल स्वरूप को धारण कर लेता है। भावार्थ यह है कि जैसे हर चीज़ का अपना गुणधर्म है वैसे ही आत्मा का भी अपना गुणधर्म है - ज्ञान, पवित्रता, प्रेम, शांति, सुख, आनंद और शक्ति। यही सात गुण निरंतर हम ईश्वर से मांगते रहते हैं। अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से कि हे प्रभु! हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले चलो, हे प्रभु! मुझ आत्मा का शुद्धिकरण करो, हे प्रभु! तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूँद के प्यासे हैं हम, हे प्रभु! शान्ति दो, हे प्रभु! सुख दो, हे प्रभु! खुशी दो मेरे जीवन में, हे प्रभु! शक्ति दो, निर्बल को बल दो शक्ति दो। यही सात गुण ईश्वर से हर इंसान माँगता रहता है। चाहे वह किसी भी धर्म का हो, किसी भी जाति का हो, किसी भी देश का हो, यही सात गुण तो माँगते रहते हैं। सभी धर्म से ऊपर अध्यात्म है। अध्यात्म अर्थात् जो आत्मा से संबंधित हो। अध्यात्म हमें इन्हीं सात गुणों को प्राप्त करने की विधि बताता है कि कैसे इन सात गुणों से अपने जीवन को भरें और आत्म उन्नति को प्राप्त करें। दूसरे शब्द में कहें कि यही आत्मा की बैट्री है। लेकिन आज के युग में ये बैट्री डिस्चार्ज हो गयी है। इन सात गुणों में से एक भी गुण सम्पूर्ण रूप में नहीं रहा। बैट्री की शक्ति बहुत कम रह गई है। ऐसी जब हालत हो जाती है तब गीता ज्ञान की आवश्यकता होती है। जहाँ व्यक्ति को भगवान यही प्रेरणा देते हैं कि 'स्वधर्म' को जागृत करो, भीतर जाओ शांति, सुख, प्रेम और आनंद की अनुभूति करो। ये बाहर नहीं मिलेगा भीतर जाओ भीतर जाकर उसको उजागर करो। उस शक्ति को बाहर लाओ। जीवन के हर संघर्ष में विजयी हो। जिस आत्मा के पास ये सतों गुणों की शक्ति हो, वह जीवन के संघर्ष में कभी भी हार नहीं सकता है। लेकिन जब ये सातों गुण सुषुप्त हो जाते हैं, उसको उजागर करने की विधि हम नहीं जानते हैं तब जीवन के हर संघर्ष में हार का अनुभव करने लगते हैं। इसलिए भगवान ने अर्जुन को कहा इनको तुम जागृत करो और उसी के आधार पर युद्ध करो अर्थात् स्वधर्म के संस्कार को जागृत करो लेकिन आज मनुष्य धीरे-धीरे अपने स्वधर्म से दूर हो गया है और परधर्म के अधीन हो गया है। स्वधर्म से परधर्म की अधीनता में आ गया है अर्थात् ज्ञान से विपरीत अहंकार के वश हो गया है। यह अहंकार परधर्म है। शुद्धि के बजाए मन में अपवित्रता आ गयी है। ये अपवित्रता परधर्म है। प्रेम के बदले नफरत आ गयी है। ये नफरत ही परधर्म है। शांति के बदले, जीवन में क्रोध आ गया है। ये क्रोध परधर्म है। जब इस परधर्म के अधीन हो गये तब व्यक्ति कभी भी रिलैक्स अनुभव नहीं करता है। सात गुणों के बजाय मनुष्य के जीवन में सात अवगुण आ गए हैं वे हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष। इन सात अवगुणों के वह परवश हो गया है। तभी कहा गया है कि हे अर्जुन! स्वधर्म सुख का आधार है और परधर्म दुःख का कारण है। तुम ये परधर्म को 'तजो' इसको समाप्त करो और वास्तविक जीवन को भी इस स्वधर्म के आधार पर जीना सीखो। -क्रमशः

अच्छाइयाँ अपनाकर कमियाँ दूर करें

ऐसा कहा जाता है कि सांप का विष तो काटने से चढ़ता है, लेकिन भोग-विलास और विषयों का विष केवल देखने से ही चढ़ जाता है। अगर विष केवल देखने से चढ़ता है तो विशेषता भी ऐसी ही होती है। जैसे बुराई संगत से प्रवेश कर जाती है, ऐसे ही अच्छाई भी मेलजोल से आपमें घुलमिल जाती है। इसलिए प्रयास करें कि हम अधिकांश मौकों पर दूसरों की विशेषताओं को अपने भीतर उतारें। पूर्ण कोई भी नहीं होता। अध्ययन करते रहें कि हमारे भीतर कौन-सी कमज़ोरियां हैं। कुछ कुदरती होती हैं तो कुछ कमज़ोरियां हम खुद ओढ़ लेते हैं। परमात्मा ने दोनों का निदान भी दिया है। आप अपनी कमी को साथियों की खूबियों से पूरा कर सकते हैं। इस भरपाई के लिए हमेशा योग्य व्यक्तियों की संगत में रहें। कमज़ोरियों को दूर करने में कतई न हिचकें। संकोच और अहंकार आड़े आएंगे, लेकिन प्रयास करें कि अपनी कमी लंबे समय तक भीतर न बनी रहे। किसी की योग्यता से अपनी कमी को दूर करना मुफ्त का सौदा है। इसे केवल देखकर भी पूरा कर सकते हैं। हो सकता है सामने वाला सहयोग न करे, लेकिन यदि आपकी तैयारी पूरी है तो वह अपनी अच्छाई को आपके भीतर उतरने से रोक नहीं सकेगा। अच्छाइयां भी तुरंत संक्रमित हो जाती हैं। ढूंढ़-ढूंढ़कर अच्छे लोगों की संगत में रहें। हम कोई अच्छा काम करते हैं तो हमारी इच्छा होती है कि लोग हमें इसका श्रेय दें, लेकिन कई बार कुछ लोग श्रेय देने में कंजूस होते हैं। जब कभी अपने को श्रेय न मिले तो उसकी पूर्ति दूसरों की अच्छाई से कर लें। यह फायदे का सौदा होगा।

जयपुर-राजा पार्क। 'विश्व शान्ति मेला' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पुष्पा,दिल्ली, पार्षद लेखराज जेसवानी, डी.आई.जी. देवेन्द्र सिंह, ब्र.कु. अरुण व अन्य।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए शरद जैन,स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री,म.प्र., ब्र.कु. वमिला तथा अन्य।

जिन्द। 'अलविदा शुगर' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. श्रीमंत साहू, प्रधान वी.के. गुप्ता, सचिव सुभाष ठुकराल, डॉ. के.एस. गोयल, प्रिन्सीपल अल्का गुप्ता, ब्र.कु. विजय बहन,ग्रामीण प्रभाग संयोजिका, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।

कलोल-गुज.। 'मेरा भारत स्वच्छ भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय सेवाकेन्द्र की राजयोग शिक्षिका तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

मुम्बई-मलाड। बॉम्बे कैथोलिक सभा की ओर से आयोजित सामुदायिक कार्यक्रम में हार्मोनियस रिलेशनशिप विषय पर बच्चों को समझाते हुए ब्र.कु. नीरजा।

राँची। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का उद्घाटन करते हुए अशोक कुमार सिन्हा,अतिरिक्त महानिदेशक,पुलिस रेल, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

फतेहगढ़। सांसद मुकेश राजपूत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

वोपोडी-पुणे। राजयोग शिविर के बाद समूह चित्र में सभी पुलिस निरीक्षक, ब्र.कु. डॉ. शर्मिला तथा ब्र.कु. रेषमा।

कागल-महा.। हसन सो मुश्रीफ,जल संपदा मंत्री,महा. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेश्री। साथ हैं ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य।

कपडवंज-गुज.। सी.एच.सी. हॉस्पिटल के मुख्य डॉ. नीरव के साथ ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. माला।

सम्बलपुर। विधायक रोहित पुजारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती।

शिनोर-गुज.। जी.ई.बी. के चीफ इंजीनियर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जगीशा।